

अक्षत वि. (तत्.) 1. क्षत या घाव से रहित 2. बिना टूटा हुआ, अखंडित, समूचा पुं बिना टूटा हुआ चावल (या कोई भी धान्य) जो देवताओं की पूजा में चढ़ाया जाता है।

अक्षत मृदा स्त्री. (तत्.) कृषि आदि मानवीय क्रियाकलापों से अछूती, प्राकृतिक अवस्था में पड़ी मिट्टी।

अक्षतयोनि वि. (तत्.) जिसका कौमार्य भंग न हुआ हो, जिस विवाहिता का पति से संसर्ग न हुआ हो।

अक्षत्र वि. (तत्.) क्षत्रियविहीन, क्षत्रियों से रहित।

अक्षपटल पुं. (तत्.) 1. प्राचीन भारतीय न्यायालय या प्राचीन भारत में मुकदमों से संबंधित कागज पत्र रखने का स्थान 2. न्यायाधीश।

अक्ष-पण पुं. (तत्.) पासों से खेलने का जुआ, पासों का खेल।

अक्षपाद पुं. (तत्.) गौतम ऋषि (न्यायदर्शन के प्रणेता), तार्किक, नैयायिक।

अक्षबंध पुं. (तत्.) वशीकरण द्वारा लोगों की दृष्टि बाँधने की प्रक्रिया।

अक्षम वि. (तत्.) 1. जो क्षम या समर्थ न हो, जिसके पास क्षमता न हो, असमर्थ, अशक्त, लाचार।

अक्षमता स्त्री. (तत्.) सामर्थ्यहीनता, असमर्थता, क्षमता का अभाव।

अक्षमा वि. (तत्.) 1. क्षमारहित, जो किसी के अपराध को क्षमा न करे 2. क्रोध, रोष।

अक्षमाला स्त्री. (तत्.) 1. रुद्राक्ष की माला 2. 'अ' से 'क्ष' तक अक्षरों की वर्णमाला।

अक्षमाली वि. (तत्.) रुद्राक्ष की माला धारण करने वाला, शिव का पर्याय।

अक्षम्य वि. (तत्.) क्षमा के अयोग्य, जैसे अक्षम्य अपराध।

अक्षय वि. (तत्.) 1. जिसका क्षय न हो 2. अनश्वर, अविनाशी, सदा रहने वाला, कभी समाप्त न होने वाला।

अक्षय चतुर्थी स्त्री. (तत्.) अंगारक चतुर्थी, किसी भी माह में किसी भी पक्ष के मंगलवार को होने वाली चतुर्थी।

अक्षयता स्त्री. (तत्.) अक्षय (अनश्वर) होने का भाव, नाश या क्षय का अभाव।

अक्षय तृतीया स्त्री. (तत्.) वैशाख शुक्ल तृतीया, आखातीज।

अक्षयधाम पुं. (तत्.) स्वर्ग, बैकुंठ।

अक्षय नवमी स्त्री. (तत्.) कार्तिक शुक्ल नवमी (तिथि)

अक्षय निधि स्त्री. (तत्.) शा.अर्थ समाप्त न होने वाला धन, किसी संस्था या व्यक्ति को उपलब्ध कराया गया आय का स्थायी साधन।

अक्षय पद पुं. (तत्.) ऐसा दिव्य स्थान जिसका कभी नाश न होता हो, मोक्ष।

अक्षय पात्र पुं. (तत्.) कभी भी रिक्त न होने वाला तथा वांछित वस्तुएँ देने वाला पात्र।

अक्षयलोक पुं. (तत्.) स्वर्ग, बैकुंठ।

अक्षय विकास पुं. (तत्.) ऐसा आर्थिक और वैज्ञानिक विकास जिसको निरंतर गतिमान रखा जा सके।

अक्षयवट पुं. (तत्.) प्रयाग में स्थित अविनाशी वट का वृक्ष, मान्यता है कि प्रलय में भी इसका नाश नहीं होता, गया के वट वृक्ष को भी अक्षय वट कहा जाता है।

अक्षया स्त्री. (तत्.) ऐसी तिथि जिसमें किए गए पुण्यकर्मों का नाश नहीं होता। यथा- सोमवती अमावस्या, वैशाख शुक्ल तृतीया, बुधवार की चतुर्थी, रविवारी सप्तमी।

अक्षयी वि. (तत्.) जिसका क्षय अर्थात् नाश न हो, अनश्वर, सदा बना रहनेवाला।

अक्षय्य-उदक पुं. (तत्.) श्राद्ध के अंत में दिया जाने वाला घृत-मधु युक्त जल।

अक्षर वि. (तत्.) जिसका नाश न हो पुं. 1. अकारादि वर्ण, मनुष्य के मुख से निकली हुई